



पशुधन संकल्प

e - Magazine

Available online at
<https://psem.vitalbiotech.org>

Article ID: PS/26/11

पशुओं में अचानक मृत्यु: कारणों की पहचान चेतावनी संकेत एवं वैज्ञानिक बचाव



डॉ. रेनू सिंह^{1*}, डॉ. शिविका चौकसे²

¹सहायक प्राध्यापक, पशु मादारोग एवं प्रसूति विभाग, ²सह-प्राध्यापक, पशु विकृति विज्ञान विभाग
 पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बांदा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बांदा, उ.प्र.

परिचय

“पशु तो कल तक बिल्कुल स्वस्थ था, फिर अचानक उसकी मृत्यु कैसे हो गई?” यह प्रश्न पशुपालकों के लिए न केवल चिंता का विषय है, बल्कि कई बार पूरे पशुधन के लिए गंभीर चेतावनी भी हो सकता है। पशुओं में अचानक मृत्यु विभिन्न संक्रामक रोगों, विषाक्त पदार्थों, चयापचयी विकारों, पोषण संबंधी असंतुलन, हृदय एवं श्वसन संबंधी समस्याओं तथा पर्यावरणीय तनाव के कारण हो सकती है।

कई बार बीमारी के बाहरी लक्षण बहुत कम समय के लिए दिखाई देते हैं या इतने हल्के होते हैं कि पशुपालक उन्हें पहचान नहीं पाता। परिणामस्वरूप पशु की स्थिति तेजी से बिगड़ती है और मृत्यु हो जाती है। इसलिए अचानक मृत्यु को केवल एक आकस्मिक घटना मानने के बजाय इसके कारण की वैज्ञानिक जांच करना अत्यंत आवश्यक है।

अचानक मृत्यु क्या है?

ऐसी मृत्यु जिसमें पशु अपेक्षाकृत सामान्य दिखाई दे और थोड़े समय में उसकी स्थिति तेजी से बिगड़कर मृत्यु हो जाए, उसे सामान्यतः अचानक मृत्यु कहा जाता है।



लेख इतिहास

Received : 21. 08.2026
 Revised : 27. 08.2026
 Accepted : 03. 09.2026



अनुरूपी लेखक

रेनू सिंह*
 E-mail ID:
renusinghvet@gmail.com



Open Access

This article is published under the terms of the
[Creative Commons Attribution License 4.0](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

इसका अर्थ यह नहीं है कि रोग उसी समय शुरू हुआ था। कई रोग शरीर में पहले से विकसित हो रहे होते हैं, लेकिन उनके स्पष्ट नैदानिक लक्षण मृत्यु के कुछ समय पहले ही दिखाई देते हैं।

अचानक मृत्यु के मामलों में समय पर जानकारी एकत्र करना और सही निदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक पशु की मृत्यु कभी-कभी पूरे झुंड में संभावित बीमारी या विषाक्तता का संकेत हो सकती है।

अचानक मृत्यु के प्रमुख कारण

अचानक मृत्यु के कारणों को मुख्य रूप से निम्न वर्गों में समझा जा सकता है।

1. संक्रामक रोग

कुछ संक्रामक रोग बहुत तेजी से पशु के शरीर में गंभीर परिवर्तन उत्पन्न कर सकते हैं। तीव्र संक्रमण, सेप्टीसीमिया तथा शरीर में विषैले पदार्थों के निर्माण के कारण पशु की स्थिति कुछ ही घंटों में गंभीर हो सकती है। ऐसे मामलों में संभावित संकेतों में तेज बुखार, अत्यधिक कमजोरी, सांस लेने में कठिनाई, नाक या मुंह से असामान्य स्राव, रक्तस्राव, अचानक गिर जाना तथा शरीर के तापमान में असामान्य परिवर्तन शामिल हो सकते हैं। यदि एक ही क्षेत्र या फार्म में कम समय में एक से अधिक पशुओं की मृत्यु हो रही हो, तो संक्रामक रोग की संभावना को गंभीरता से लेना चाहिए। ऐसी स्थिति में मृत पशु का उचित परीक्षण तथा अन्य प्रभावित पशुओं की शीघ्र पशुचिकित्सकीय जांच आवश्यक है, ताकि संभावित संक्रामक कारण की पहचान कर समय पर आवश्यक नियंत्रण एवं रोकथाम के उपाय किए जा सकें।

2. विषाक्तता-एक अदृश्य खतरा

पशुओं में अचानक मृत्यु का एक महत्वपूर्ण कारण विषाक्तता भी हो सकता है। पशु गलती से जहरीले पौधे, कीटनाशक, रसायन, दूषित पानी या खराब चारा खा सकता

है। विशेष रूप से लंबे समय तक या अधिक मात्रा में फफूंदयुक्त चारे में उपस्थित माइकोटॉक्सिन का सेवन पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है और गंभीर स्थिति उत्पन्न कर सकता है। विषाक्तता की स्थिति में पशु में अत्यधिक लार आना, कंपकंपी, मांसपेशियों में ऐंठन, सांस लेने में परेशानी, बेचौनी, कमजोरी, दस्त तथा अचानक गिर जाना जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। ऐसे मामलों में पशु के चारे, पानी तथा आसपास के वातावरण की जांच करना और शीघ्र पशुचिकित्सकीय परीक्षण कराना आवश्यक है।

पशुपालक के लिए सावधानी:

फफूंदयुक्त, बदबूदार या संदिग्ध गुणवत्ता वाले चारे को पशुओं को न खिलाएँ। चारे में अचानक परिवर्तन भी सावधानीपूर्वक और क्रमिक रूप से किया जाना चाहिए।

3. पेट फूलना (Bloat)

जुगाली करने वाले पशुओं में अत्यधिक गैस बनने या गैस बाहर न निकल पाने की स्थिति में ठसवंज हो सकता है। गंभीर स्थिति में पेट के अंदर दबाव बढ़ने से श्वसन और रक्त संचार प्रभावित हो सकते हैं तथा पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

प्रमुख संकेत

पेट का अचानक फूलना, बेचौनी, सांस लेने में कठिनाई = आपात स्थिति ऐसी स्थिति में घरेलू उपचार में समय न गंवाकर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

4. चयापचयी विकार

उच्च उत्पादन वाले पशुओं, विशेषकर दुग्ध पशुओं में कुछ चयापचयी विकार गंभीर स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। शरीर में ऊर्जा, कैल्शियम तथा अन्य आवश्यक पोषक तत्वों के असंतुलन का प्रभाव मांसपेशियों, तंत्रिका तंत्र और हृदय की कार्यप्रणाली पर पड़ सकता है।

ऐसे पशुओं में अचानक कमजोरी, खड़े होने में कठिनाई, बार-बार लेटना, कंपकंपी, भूख में कमी तथा चेतना में परिवर्तन जैसे संकेत दिखाई दे सकते हैं। इसलिए प्रसव के आसपास के समय में पशुओं की विशेष निगरानी आवश्यक है, ताकि किसी भी असामान्य लक्षण की पहचान कर समय पर पशुचिकित्सकीय सहायता प्राप्त की जा सके।

5. गर्मी का तनाव

गर्मियों में अत्यधिक तापमान और आर्द्रता पशुओं के लिए गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन सकती है। शरीर का तापमान नियंत्रित करने की क्षमता प्रभावित होने पर पशु में हीट स्ट्रेस विकसित हो सकता है। इसकी स्थिति में तेज और उथली सांस, अत्यधिक हांफना, अधिक लार आना, चारा कम खाना, दूध उत्पादन में कमी, कमजोरी तथा खड़े रहने में कठिनाई जैसे चेतावनी संकेत दिखाई दे सकते हैं। ऐसे लक्षण दिखाई देने पर पशु को तुरंत छायादार एवं हवादार स्थान पर रखना, पर्याप्त स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना तथा

आवश्यकतानुसार शीघ्र पशुचिकित्सकीय सहायता प्राप्त करना चाहिए।

वैज्ञानिक बचाव

पशुओं को पर्याप्त छाया, स्वच्छ एवं ठंडा पानी, उचित वेंटिलेशन और अत्यधिक गर्मी के समय अतिरिक्त प्रबंधन उपलब्ध कराना चाहिए।

6. हृदय एवं श्वसन संबंधी समस्याएँ

कुछ हृदय एवं श्वसन संबंधी रोगों में पशु बाहर से सामान्य दिखाई दे सकता है, लेकिन अचानक अत्यधिक परिश्रम, तनाव या बीमारी के बढ़ने पर उसकी स्थिति तेजी से बिगड़ सकती है।

सांस लेने में कठिनाई, अत्यधिक थकान, नीली या असामान्य रंग की श्लेष्म झिल्लियाँ तथा अचानक गिरना गंभीर संकेत हो सकते हैं।

मृत्यु से पहले शरीर देता है संकेत

अचानक मृत्यु के मामलों में पशुपालक के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात है—पशु के सामान्य व्यवहार में होने वाले छोटे बदलावों को पहचानना।

मृत्यु से पहले निम्नलिखित संकेतों पर ध्यान देना चाहिए:

S.N.	चेतावनी संकेत	संभावित महत्व
1.	चारे का कम सेवन	बीमारी, दर्द या चयापचयी समस्या
2.	जुगाली कम होना	पाचन/सामान्य स्वास्थ्य में गड़बड़ी
3.	अलग-थलग रहना	बीमारी या कमजोरी
4.	तेज सांस लेना	श्वसन समस्या/Heat Stress
5.	पेट फूलना	Bloat की संभावना
6.	दूध उत्पादन में अचानक कमी	बीमारी या metabolic stress
7.	चलने में कठिनाई	मांसपेशीय/तंत्रिका/चयापचयी समस्या
8.	असामान्य मल या मूत्र	पाचन या अन्य रोग
9.	शरीर का तापमान असामान्य होना	संक्रमण या अन्य गंभीर स्थिति

एक अकेला संकेत किसी विशेष बीमारी की पुष्टि नहीं करता।

सही निदान के लिए पशु चिकित्सक की जांच आवश्यक है।

अचानक मृत्यु के बाद क्या करें?

अचानक मृत्यु होने पर पशुपालक की पहली प्रतिक्रिया घबराहट नहीं, बल्कि सावधानी और सूचना एकत्र करना होनी चाहिए।

1. अन्य पशुओं को अलग रखें

यदि संक्रामक रोग की संभावना हो तो प्रभावित क्षेत्र से स्वस्थ पशुओं को दूर रखें।

2. पशु चिकित्सक को तुरंत सूचना दें

विशेषकर तब, जब एक से अधिक पशु बीमार हों, एक से अधिक पशुओं की मृत्यु हुई हो, तेज बुखार या रक्तस्राव के संकेत दिखाई दे रहे हों, अथवा अचानक बड़ी संख्या में पशु प्रभावित हो रहे हों। ऐसी स्थिति में विलंब किए बिना पशु चिकित्सक से संपर्क करना आवश्यक है, ताकि समय पर रोग की जांच, संभावित कारण की पहचान तथा आवश्यक उपचार एवं नियंत्रण के उपाय किए जा सकें।

3. चारा और पानी की जांच करें

हाल में बदला गया चारा, नया खाद्य पदार्थ, कीटनाशक, दवा या कोई रसायन उपयोग में आया हो तो इसकी जानकारी पशु चिकित्सक को दें।

4. मृत पशु के साथ अनावश्यक छेड़छाड़ न करें

संदिग्ध संक्रामक रोग या विषाक्तता में शव को काटना, खोलना या एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना उचित नहीं है। स्थानीय पशु चिकित्सा अधिकारियों की सलाह का पालन करना चाहिए।

पोस्टमार्टम: मृत्यु के कारण की वैज्ञानिक खोज "मृत्यु के बाद भी निदान की संभावना समाप्त नहीं होती।"

अचानक मृत्यु के मामलों में शव-परीक्षण मृत्यु के संभावित कारण को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है। निदान के

लिए आवश्यकता के अनुसार उतक विकृतिविज्ञान, जीवाणुविज्ञानीय परीक्षण, विषाणुविज्ञानीय परीक्षण, विषविज्ञानीय परीक्षण, परजीवीविज्ञानीय परीक्षण अथवा अन्य आवश्यक प्रयोगशाला परीक्षणों का सहारा लिया जा सकता है।

इन जांचों का उद्देश्य केवल यह पता लगाना नहीं है कि "पशु क्यों मरा?", बल्कि यह जानना भी है कि "क्या अन्य पशु भी जोखिम में हैं?"

एक मृत्यु पूरे झुंड के लिए चेतावनी क्यों हो सकती है?

मान लीजिए किसी फार्म में अचानक एक पशु की मृत्यु होती है। यदि कारण संक्रामक रोग, विषाक्तता या दूषित चारा है, तो अन्य पशु भी जोखिम में हो सकते हैं।

इसलिए: लगातार मृत्यु → तत्काल पशु चिकित्सा एवं प्रयोगशाला जांच—इस दृष्टिकोण से समय पर कारण की पहचान करके आगे होने वाले आर्थिक नुकसान को कम किया जा सकता है।

रोकथाम ही सबसे प्रभावी उपाय

अचानक मृत्यु के सभी मामलों को पूरी तरह रोकना संभव नहीं है, लेकिन उचित पशुपालन एवं स्वास्थ्य प्रबंधन से जोखिम को काफी कम किया जा सकता है।

लगातार पशु मृत्यु → तत्काल पशु चिकित्सकीय एवं प्रयोगशाला जांच कराएँ

यदि मृत्यु का कारण संक्रामक रोग, विषाक्तता या दूषित चारा-पानी है, तो अन्य पशु भी जोखिम में हो सकते हैं। इसलिए समय पर कारण की पहचान और उचित नियंत्रण उपाय अपनाकर आर्थिक हानि को कम करने तथा शेष पशुओं को सुरक्षित रखने में मदद मिल सकती है।

याद रखें:

“मृत्यु को नजरअंदाज नहीं, कारण को पहचानेकृतसमय पर जांच कराएँ और पशुधन बचाएँ।”

रोकथाम ही सबसे प्रभावी उपाय

अचानक मृत्यु के सभी मामलों को पूरी तरह रोकना संभव नहीं है, लेकिन उचित पशुपालन एवं स्वास्थ्य प्रबंधन से जोखिम को काफी कम किया जा सकता है।

पशुपालकों के लिए “अचानक मृत्यु जांच-सूत्र”

अचानक मृत्यु की स्थिति में इन 6 बातों पर ध्यान दें:

1. **संकेत:** मृत्यु से पहले कौन-से असामान्य लक्षण दिखाई दिए?
2. **आहार-पानी:** क्या चारे, दाने या पानी में हाल में कोई बदलाव हुआ?
3. **अन्य पशु:** क्या दूसरे पशु भी बीमार या प्रभावित हैं?
4. **समय:** लक्षण कब शुरू हुए और कितनी तेजी से स्थिति बिगड़ी?
5. **वातावरण:** क्या अत्यधिक गर्मी, ठंड, बारिश, परिवहन या प्रबंधन में बदलाव हुआ?
6. **जांच:** क्या पोस्टमार्टम एवं प्रयोगशाला जांच द्वारा मृत्यु के कारण की पुष्टि आवश्यक है?

याद रखें:

“संकेत पहचानें → कारण खोजें → जांच कराएँ → अन्य पशुओं को बचाएँ।”

निष्कर्ष

पशुओं में अचानक मृत्यु केवल एक पशु की मृत्यु नहीं हैय यह कई बार पूरे झुंड के स्वास्थ्य के लिए चेतावनी संकेत हो सकती है। संक्रामक रोग, विषाक्तता, खराब चारा, पेट फूलना, चयापचयी विकार, भ्रंज जतमे तथा अन्य रोग इसके संभावित कारण हो सकते हैं।

मृत्यु से पहले दिखाई देने वाले छोटे-छोटे बदलावों को पहचानना, समय पर पशु चिकित्सक से संपर्क करना और आवश्यकता पड़ने पर च्वेज-उवतजमउ तथा संइवतंजवतल क्पंहदवेपे कराना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अंततः, पशु स्वास्थ्य प्रबंधन का मूल मंत्र यही है—

“संकेत पहचानें → कारण खोजें → समय पर उपचार करें → पशुधन को सुरक्षित रखें।” एक पशु की समय पर पहचान की गई बीमारी, पूरे झुंड को बचा सकती है।